

**सगर पुं.** (तत्.) एक सूर्यवंशी राजा, जो रामचंद्र के पूर्वज थे, इनके साठ हजार पुत्र थे, गंगा को धरती पर लाने वाले राजा भगीरथ इन्हीं के वंशज थे **वि.** विषयुक्त, विषैला, जहरीला।

**सगरा वि.** (तद्.) सब, तमाम, पूरा, सकल।

**सगर्भ वि.** (तत्.) 1. सगा, सहोदर, एक ही गर्भ से उत्पन्न 2. जिसके पत्ते अभी खुले न हों (पौधा)।

**सगर्भा स्त्री.** (तत्.) 1. गर्भवती स्त्री 2. सगी बहन, सहोदरा 3. गूढ़ अर्थ वाली।

**सगर्भ्य वि.** (तत्.) सहोदर।

**सगल वि.** (तद्.) सकल, सब।

**सगला वि.** (तद्.) सकल, सब।

**सगवती स्त्री.** (देश.) खाने का मांस, गोश्त, कलिया, सगौती।

**सगवारा पुं.** (देश.) गाँव के आस-पास की और उससे संबंध रखती हुई भूमि।

**सगा वि.** (तद्.) 1. सहोदर, एक ही माता-पिता से उत्पन्न, निकट संबंधी 2. जो संबंध में अपने ही कुल का हो।

**सगाई स्त्री.** (तत्.) 1. सगा होने का भाव, सगापन 2. आत्मीयता और घनिष्ठता का साथ 3. संबंध, रिश्ता, नाता 4. मंगनी, विवाह का ठहराव 5. छोटी जातियों में होने वाला वह दाम्पत्य संबंध जो पूर्व विवाहिता स्त्री से किया जाता है 6. अतिघनिष्ठतापूर्ण पारिवारिक संबंध।

**सगीर वि.** (अर.) 1. छोटा, कम आयु वाला 2. हीन, अदना।

**सगुण वि.** (तत्.) 1. गुणों से युक्त, गुणों वाला 2. सत्व, रज, तम गुणों से युक्त, त्रिगुणात्क 3. डोरी या धागे से युक्त पुं. 1. सत्व, रज, तम गुणों से युक्त ब्रह्म, साकार, ब्रह्म 2. ईश्वर के सगुण रूप की उपासना करने वाला संप्रदाय विशेष।

**सगुन पुं.** (तद्.) 1. शकुन 2. सगुण।

**सगुनाना अ.क्रि.** (तद्.) शकुन विचारना, शकुन बतलाना।

**सगुनिया पुं.** (तद्.) वह व्यक्ति जो लोगों को शकुनों के शुभ-अशुभ का फल बतलाता है, शकुन विचारने और उनका फल बताने वाला।

**सगुनौती स्त्री.** (तद्.) 1. शकुन विचारने, निकालने की क्रिया या भाव 2. मंगलाचरण, मंगलपाठ।

**सगृह पुं.** (तत्.) गृहस्थ, सपरिवार।

**सगोत्र पुं.** (तत्.) 1. एक ही गोत्र के अर्थात् एक ही पूर्वज से उत्पन्न, वंशज, एक ही कुल के 2. कुल, वंश, परिवार।

**सगगड़ पुं.** (देश.) दो पहिए ही हाथ से खींची जाने वाली मजबूत गाड़ी जो भारी बोझ लादने के काम में आती है।

**सघन वि.** (तत्.) 1. घना, अविरल 2. ठोस 3. बहुत अधिक।

**सघनता स्त्री.** (तत्.) सघन होने की अवस्था या भाव, निविड़ता।

**सघनतामापी पुं.** (तत्.) 1. किसी भी द्रव में सघनता और तरलता को मापने वाला यंत्र 2. भौ. प्रकाश की पारदर्शिता को मापने वाला यंत्र densimeter

**सघनपर्णी पुं.** (तत्.) सघन पत्तों वाला, वह वृक्ष जिसमें पत्तियाँ पास-पास हों।

**सघला वि.** (तद्.) सकल, सब, सारा।

**सच वि.** (तद्.) 1. जो यथार्थ हो, वास्तविक पुं. 2. झूठ रहित, सत्य, यथार्थ कथन।

**सचक्री पुं.** (तत्.) सारथि, रथ चलाने वाला।

**सचन पुं.** (तत्.) सेवा करने की क्रिया या भाव, सेवन **वि.** जो सहायता अथवा सेवा करने को तत्पर रहे।

**सचना स.क्रि.** (तद्.) 1. संचित करना, इकट्ठा करना 2. कार्य का संपादन करना, कार्य पूरा